गेहूं का पीला रत्तुआ
कृषि कुंभ (सितंबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 04, पृष्ठ संख्या 09–10

गेहूं का पीला रत्तुआ : रोग पहचान एवं प्रबंधन

श्रेया[1], आरजू[2] एवं रजत[1]
[1]चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
[2]महाराणा प्रताप हॉर्टिकल्चरल यूनिवर्सिटी, करनाल, भारत।
Email Id: nagpalshreya1998@gmail.com

गेहूं उत्तर भारत में रबी में उगाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है। औसत सिंचाई वाले क्षेत्रों में अनाज के लिए गेहूं की फसल को ज़्यादा पसंद किया जाता है।

अधिक लागत वाली फसल होने की वजह से अनेक कारक जैसे खरपतवार, कीट–कीटाणु, रोग इत्यादि फसल के जीवन चक्र के दौरान उसके विकास दर एवं उपज को निर्धारित करते हैं।

कुछ प्रमुख रोग जैसे रत्तुआ, करनाल बंट, खुली कंगियारी, पर्ण झुलसा रोग आदि पौधे की वृद्धि, जनन क्षमता एवं कार्यिकी पर विपरीत प्रभाव डालते हैं । गत वर्षों के आंकड़ों के अनुसार पीला रत्तुआ गेहूं के सबसे खतरनाक और विनाशकारक रोगों में से एक है। इसे धारीदार रत्तुआ भी कहते हैं जो पक्सीनिआ स्ट्राइफॉर्मिस नामक कवक से होता है।

पीला रत्तुआ फसल की उपज में शत प्रतिशत नुकसान पहुंचाने की क्षमता रखता है। इस बीमारी से उत्तर भारत में गेहूं की फसल का उत्पादन और गुणवत्ता दोनों ही प्रभावित होती हैं।

फसल सत्र के दौरान हल्की बारिश, उच्च आर्द्रता एवं ठंडा मौसम पीला रत्तुआ के संक्रमण के लिए अनुकूल परिस्थितियां पैदा करते हैं । इसी दौरान यदि तेज हवाएं चलती हैं, तो इस बीमारी का प्रकोप दुगुना हो जाता है। उत्तर भारत में यह मेल जनवरी फरवरी के माह में उत्पन्न होता है।

रोग पहचान :

यदि समय रहते खेत में इस रोग की पहचान कर ली जाए तो इसका नियंत्रण सुनियोजित प्रकार से किया जा सकता है।

प्रारंभिक पत्तों की ऊपरी सतह पर पीले रंग के छोटे छोटे धब्बे दिखना इस रोग का शरुआती लक्षण है। समय के साथ यह पीले धब्बे पाउडरनुमा धारियों में तबदील हो जाते हैं । पत्तियों को छूने पर पीले रंग का हल्दी जैसा पाउडर हाथों पर लग जाता है। यह पीला पाउडर असल में कवक बीजाणु होते हैं जो रोग को स्वस्थ पौधों तक फैलाने का कार्य करते हैं। तापमान बढ़ते ही पत्ते का निचला हिस्सा काला पड़ने लगता है। रोगग्रस्त पौधे की पत्तियां सूख जाती हैं और अंततः पौधा संभावित उपज नहीं दे पाता। खेतों में इस रोग का संक्रमण छोटे गोलाकर क्षेत्र से शुरू होता है जो धीरे धीरे पूरे खेत में फैल जाता है।

रोग उपचारः

रोग प्रबंधन का सबसे प्रभावी एवं व्यवहारिक साधन रोग–प्रतिरोधक किस्मों का प्रयोग करना है। अनेक सहिष्णु किस्में हरियाणा क्षेत्र के लिए अनुमोदित हैं जैसेः

- अगेती बीजाई के लिए – डब्ल्यू एच 1270, डब्ल्यू एच 1142
- सिंचित क्षेत्र में समय पर बीजाई के लिए– एच डी 3086, एच डी 2967, डब्ल्यू एच 1105, डब्ल्यू एच 542, डब्ल्यू एच 1025. डब्ल्यू एच 1184, डी बी डब्ल्यू 88, डी बी डब्ल्यू 621–50
- बारानी क्षेत्र में समय पर बीजाई के लिए– एच डी 3043, डब्ल्यू एच 1080, पी बी डब्ल्यू 396, पी बी डब्ल्यू 644
- पछेती बीजाई के लिए– एच डी 3059, डी बी डब्ल्यू 16, डी बी डब्ल्यू 71, डी बी डब्ल्यू 90, डब्ल्यू एच 1124, डब्ल्यू एच 1021, पी बी डब्ल्यू 590

ज्यादा संक्रमण वाले क्षेत्रों में एहतियाती तौर पर बीजाई से पहले उपयुक्त फफूंदनाशक से बीज उपचार करना भी लाभकारी सिद्ध होता है।

खेत में बीमारी के लक्षण दिखते ही 200 मि.ली. प्रोपिकोनाजोल 25 ई.सी. (टिल्ट 25 ई.सी), टेबूकोनाजोल 25 ई.सी. (फोलिकर) या ट्राईडीमीफोन 25 डब्ल्यू. पी. (बेलिटोन) को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ के दर से छिड़काव करें।

इसके आलावा 800 ग्राम जिनेब (डाइथेन जेड 78) या मैंकोजेब (डाइथेन एम 45) को भी 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ के दर से प्रयोग किया जा सकता है। यदि मौसम रोग फैलाव के लिए अनुकूल हो तो 10–15 दिनों बाद दूसरा छिड़काव करना फायदेमंद रहता है।

यदि किसान गेहूं की जैविक खेती कर रहा है अथवा जैविक रूप से रोग प्रबंधन करना चाहता है तो निम्नलिखित जैविक उपचार भी रोग की रोकथाम के लिए कार्यशील हैं :

- एक किग्रा. तम्बाकू की पत्तियों का पाउडर 20 किग्रा. लकड़ी की राख के साथ मिलाकर बीज बुवाई या पौध रोपण से पहले खेत में छिड़काव करें।
- गोमूत्र व नीम का तेल मिलाकर अच्छी तरह से मिश्रण तैयार कर लें और 500 मिली. मिश्रण को प्रति पम्प के हिसाब से फसल में छिड़काव करें।
- 10 लीटर गोमूत्र, दो किलो नीम की पत्ती व 250 ग्राम लहसुन का काढ़ा बनाकर 80–90लीटर पानी के साथ प्रति एकड़ छिड़काव करें।

इस प्रकार गेहूं की फसल को पीला रत्तुआ के प्रकोप से समय रहते बचाया जा सकता है ताकि कुल उपज एवं फसल की गुणवत्ता पर न्यूनतम प्रभाव पड़े।

चित्र 1: खेत में पीला रत्तुआ के लक्षण

चित्र 2: पीला रत्तुआ ग्रस्त पत्ते का नजदीकी दृश्य